1.

BA-II (S/G)
मैथिली

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College Rajnagar

द्विरागमन

Topic: द्विरागमन उपन्यासमे नारी विमर्श

हरिमोहन झा द्वारा लिखितक ई स्वीकार दुनक महत्ताक परिचायक थिक। वस्तुतः कन्यादानक बाद द्विरागमन लिखबाक कोनो प्रयोजन नहि छल। कन्यादानमे समाजक उजाहि समस्याकेँ उठाओल गेल अछि तकर निदानो ओहिमे कहि देल गेल अछि। सामाजिक समस्याकेँ हृदयंगम करबामे, ओकर विविध आयामक संकेत देबामे तथा ओकर उपस्थापनमे ई उपन्यास बेजोड़ अछि। मिथिलाक गाम आ गामक लोक जतेक मुखर 'द्विरागमन' मे अछि ततेक कम उपन्यासमे भेटैत अछि। कन्यादान नायिका-प्रधान कथा नहि अछि, मुदा 'द्विरागमन' नायिका-प्रधान कथा थिक

२.

नायिका मुनचीदाइ पति द्वारा ग्रहीत ग्राह्य होइबि, तकर प्रक्रियाक सूक्ष्म चित्रण एहिमे भेल अछि। ई उपन्यासमे नवजा-गरण पीड़ाकेँ, एकु पैघ अँगौठी मोड़केँ बहुत सरलताएँ देखबैत अछि।

मिथिलाक नवजागरण अँग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारसँ भेल अछि। एतके प्रचार आइ जँ संस्कृत शिक्षाक भेल रहैत तँ मैथिल स्त्री आर बेसी शोषण आ अपमानमे एहि प्रकारक जागरण नहि होइत।

अँग्रेजी शिक्षाक माढे आइयो परम्परित मिथिला बहुत प्रेमपूर्ण आ सहज नहि भेल अछि। ई तीत दवाइ जकाँ घोँटल जा रहल अछि। अँग्रेजी शिक्षित युवक अपन गाम घरकेँ छोड़ने जा रहल छैक। अपन परम्पराकेँ बिसरने जा रहल छथि। ई अपन भाषाकेँ मारने जा रहल छथि। ई नवजागरण नव आर्थिक सम्पन्नता देलकैक अछि। मिथिलाक गाम आइयो पहिनेसँ बेसी विपन्न भेल जा रहल अछि, गामक कलह बढ़ल जा रहल अछि। गामसँ बहरायल नगरमे नव बासी मैथिल

3\. परिवार बेसी संतुष्ट आ दुखेन अर्जीत अछि।

द्विरागमन एहि तरहक साक्षी अछि। ई एहि परिवर्तनक प्रतिक्रियाक एक दस्तावेज थिक। कुचचीहाइक मायकें ई समता बात तीत दवाइ जकाँ धोंत पड़ैत छनि। ई ग्रहण कोनो सोद्ध ग्रहण नहि थिकैक, तें ई प्रक्रिया स्वाभाविक नहि लगैत छैक।

मैथिल समाजमे नारी युग-युगसँ शोषित आ दमित होइत अछि। ओकर खोपा, कानक बाली, लाल-पीयर साड़ी आदि वस्तुकें छिपबाक बहुत प्रयत्न करैत छैक। जखन गाममे दुर कोनो रेलवे स्टेशन आ बस स्टैंड पर प्रतीक्षा करैत मैथिल परिवारकें हमरालोकनि देखैत छी। मैथिल नारी ततेक अशिक्षित आ आर्थिक रूपें ततेक परजीवी अछि जे ओ प्रत्येक क्षण एक-दोसरक सहारा चाहैत अछि। जेना मैथिलाक मैथिल समाजमे पुरुष स्त्रिगणकें नहि टोकबाक प्रयास करैत छथि, तहिना मैथिल नारी अपना घरमे सब पुरुषकें टोकबाक प्रयास नहि करैत छथि। एक दिस संस्कृत साहित्यमे नारी-चित्रण परम रसमय भेल अछि, जे सूचित करैत अछि जे सामन्तवादी दृष्टिकोण नारीकें कतेक शोषित आ अपमानित कयलक अछि।

4. मुदा, गामक नारीकेँ पुरुष-समाज ओहो कालदेँ दबने-दबने तेहन हीन कोटिक बना देलक अछि जे ओकरामे आ खुट्टामे बान्हल गाय-बकरीमे अन्तर कऽ पायब कठिन अछि।

युग-युगसँ पाषाणी भेल मैथिल कन्याक दुर्गति 'कन्यादान'मे सी०एम० मिश्रा करैत छथि। बुच्चीदाइ पावक मुक्त भेल बालि पर चढ़ाओल छागरक आरति जका पछरायल छथि। आधुनिक मिथिलाक प्रत्येक सी०एम० मिश्रा बहल बुच्चीदाइ भेमैत छथि। बुच्चीदाइ 'लौकिक कायाकल्प भऽ रहल अछि, से कथा 'द्विरागमन'मे हरिमोहन बाबू कहैत छथि।

द्विरागमन' उपन्यासमे स्त्री शीलाक अनिच्छापूर्वक लेल जयबाक चर्चा अछि। मुदा शेष गामक शिलाक कोनो चर्चा नहि अछि। 'द्विरागमन मे इच्छा, अनिच्छा आ संस्कार मे रहबाक प्रयास जीबा लेल कयल गेल समझौताक रूपमे अंकित अछि। स्त्रीक शोषणक लेलेँ पैघ उदाहरण ई थिक जे ओ जीबाक लेल नहि। कोनो पैघ

5. पैघ लक्ष्यकें प्राप्त करबा लेल नहि, मात्र कन्यादान आ द्विरागमन लेल जन्म लैत अछि आ जीबैत अछि।

हरिमोहन बाबू नव हिस्सातिक आग्रही छथि आ ओकर विरोध आ मैथिल पंडित जकाँ कतहु ने कएलनि अछि। ई अन्यायक्रम हरिमोहन बाबू तत्कालीन समाजक रीतिहासें नहि कहैत अछि, सामाजिक परिवर्तनक आवश्यकताकें आइयो अपरिहार्य मानबाक आधार दैत अछि। मुदा विकास स्थान, काल, पात्रक अनुकूल हो तकर अनिवार्यताकें हरिमोहन झा जतेक दृढतापूर्वक रेखांकित कएलनि से आइयो महत्वपूर्ण अछि।

समाप्त

Jamyat
11/04/2020